अंक 50

अक्टूबर – दिसंबर 2021

कृषि दर्पण

CRDE

ग्रामीण विकास हेतु समर्पित कृषि पत्रिका

सी. आर. डी. ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनिया, तहसील – इछावर, जिला – सीहोर (म.प्र.)

रबी फसलों हेतु उर्वरको का सन्तुलित उपयोग

किसान भाईयों नमस्कार,

किसान भाईयों वर्तमान में रबी फसलों (गेहूँ, चना, मसूर, लहसुन, प्याज आदि) की तैयारियॉ आप द्वारा की जा रही है। फसलों से बेहतर उत्पादन प्राप्त करने हेतु सिंचाई जल के अतिरिक्त खाद, उन्नत बीज व अनुशंसित रसायन महत्वपूर्ण आदान है। प्रत्येक फसल की उर्वरको (पोषक तत्वों) की माँग अलग– अलग होती है। फसलों में नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश मुख्य पोषक तत्व के रूप में उपयोग किये जाते है। जिनकी पूर्ति हेतु किसान भाई सिंगल सुपर फास्फेट, यूरिया, पोटाश व मिश्रित उर्वरक, डी. ए. पी., एन. पी. के. आदि का उपयोग करते है।

नत्रजन तत्व फसल की बढवार हेतु फास्फोरस पौधों की जडों के विकास एवं पोटाश तत्व पौधों के बाहरी आवरण को मजबूती देने व कीटों तथा रोगों से लडने की क्षमता प्रदान करता है। अतः इन तीनों ही तत्वों की संतुलित मात्रा में फसलवार अनुशंसा वैज्ञानिकों द्वारा की गई है। पोषक तत्वों के उपयोग से पूर्व यह समझना नितान्त आवश्यक है कि फसलवार वैज्ञानिकों द्वारा अनुशंसित मात्रा क्या है? एवं उसकी पूर्ति हेतु किस उर्वरक का उपयोग करना है? फसलों हेतु मुख्य पोषक तत्वों के साथ– साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों (जिंक, सल्फर आदि) की सिफारिश भी वैज्ञानिकों द्वारा की जा रही है। अतः सूक्ष्म पोषक तत्वों का उपयोग भी मृदा स्वास्थ्य कार्ड में की गई अनुशंसा अनुरूप अवश्य किया जावें।

मुख्य पोषक तत्वों की पूर्ति हेतु एन. पी. के. (12:32:16, 12:32:06) मिश्रित उर्वरको के उपयोग से फसलों में संतुलित मात्रा में पोषक तत्वों की पूर्ति हो जाती है जिसका प्रभाव फसल उत्पादन व उपज की गुणवत्ता वृद्धि पर पडता है। साथ ही मृदा स्वास्थ्य भी बेहतर बना रहता है। अतः किसान भाई फसलों में बुवाई के समय उर्वरक एन. पी. के. का उपयोग अवश्य करे।

दीपोत्सव पर्व की हार्दिक बधाईयॉ,

संपादक

संरक्षक

कर्नल जगदीश कुमार गुलिया
अध्यक्ष
सी. आर. डी. ई., सेवनियॉ, सीहोर (म.प्र.)

परामर्श

डॉ. एस. आर. के. सिंह
निदेशक (कार्यकारी)
कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन–IX, आई. सी. ए. आर., जबलपुर (म. प्र.)

प्रकाशक

सी. आर. डी. ई.– कृषि विज्ञान केन्द्र,
ग्राम– सेवनियॉ, तहसील– इछावर,
जिला– सीहोर, पिन– 466115,
फोन नं.– 07489–763338

संपादक

जैनेन्द्र कुमार कनौजिया

संपादन सहयोग

श्री संदीप टोडवाल, श्री देवेन्द्र पाटिल,
श्री धर्मेन्द्र पटेल, डॉ. विमलेश कुमार,
डॉ. कुसुम सुखवाल

संकलन एवं ग्राफिक्स

श्री अक्षय कालकर, श्री भानुपाल सिंह

राष्ट्रीय पोषण महाभियान एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम

जन कल्याण एवं सुराज कार्यक्रम

कृषक सेमिनार

विगत तीन माह की गतिविधियाँ (जुलाई– सितम्बर, 2021)

अ. प्रक्षेत्र परीक्षण

क्रं.	विषय	कृषक संख्या
01	अजौला खिलाने से बकरियों के शरीर भार में वृद्धि का ऑकलन	05
02	शीशम की पत्तियों से बने पेस्ट के उपयोग से गाय/भैंस में दस्त के उपचार का ऑकलन	15

ब. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	विषय	तकनीकी की संख्या	क्षेत्रफल (हे.)	कृषक संख्या
01	पशुपालन	02	–	10

स. प्रशिक्षण कार्यक्रम : कार्यशील कृषक, कृषक महिलाओं एवं ग्रामीण युवाओं हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी की संख्या
01	फसल उत्पादन	06	1–2 दिन	250
02	उद्यानिकी	05	1–2 दिन	148
03	मृदा विज्ञान	04	1–2 दिन	84
04	कृषि प्रसार	04	1–2 दिन	92
05	पशुपालन	04	1–2 दिन	108

द. स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिवस)	प्रशिक्षणार्थी संख्या
01	वर्मी कम्पोस्टिंग	01	05 दिन	10
02	डेयरी प्रबन्धन	01	05 दिन	10

य. विस्तार अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण –

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिवस)	प्रशिक्षणार्थी
01	थनैला रोग प्रबन्धन	01	01	22

र. अन्य विस्तार गतिविधियाँ

क्र.	गतिविधि	संख्या	प्रतिभागी
01	इन्टरफेस	01	125
02	कृषक संगोष्ठी	01	72
03	कृषक सेमिनार	01	65
04	पूर्व प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन	02	55
05	राष्ट्रीय पोषण महाभियान एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम	01	125
06	गाजरघास उन्मूलन सप्ताह	01	187
07	कृषि तकनीकी सप्ताह	01	515
08	स्वच्छता गतिविधि	08	134
09	समूह बैठक	07	120
10	विधि प्रदर्शन	04	53
11	निदानिक भ्रमण	06	78
12	प्रक्षेत्र दिवस	10	237
13	कृषक आदान विक्रेता बैठक	01	45
14	वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण	50	429
15	कृषकों का प्रक्षेत्र पर भ्रमण	–	203
16	किसान मोबाईल संदेश	07	34376
17	पशु टीकाकरण शिविर	01	15
18	प्रगतिशील पशुपालकों से परिचर्चा	01	23
19	कृषि लेख	02	–

आगामी तीन माह की गतिविधियाँ (अक्टूबर– दिसम्बर, 2021)

अ. प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	विषय	कृषक संख्याँ
01	मसूर किस्म : (RVL-11-6) का ऑकलन	05
02	चना की उन्नत किस्म आर. वी. जी. –204 का ऑकलन	05
03	नेनो जिंक और नेनो यूरिया का गेहूँ फसल में ऑकलन	05
04	लहसुन फसल में सूक्ष्म पोषक तत्वों का ऑकलन	10
05	लहसुन किस्म जी– 384 का ऑकलन	05
06	प्याज व लहसुन फसल उत्पादन तकनीक में विभिन्न सूचना स्त्रोतों के प्रभाव का ऑकलन	60
07	कबूतर की बीट के उपयोग से बछडियों में गर्मी में आने की अभिव्यक्ति का ऑकलन	15

ब. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन –

क्र.	विषय	तकनीकों की संख्या	क्षेत्रफल (हे.)	कृषकों की संख्या
01	फसल उत्पादन	02	4.0	15
02	मृदा विज्ञान	02	4.0	10
03	उद्यानिकी	02	1.0	20
04	कृषि प्रसार	01	4.0	10
05	पशुपालन	03	1.0	70
06	गृह विज्ञान	01	–	20

स. प्रशिक्षण कार्यक्रम – कृषक, कृषक महिलाओं एवं ग्रामीण युवाओं हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिन)	प्रशिक्षणार्थी संख्या
01	फसल उत्पादन	04	1–2 दिन	100
02	मृदा विज्ञान	05	1–2 दिन	125
03	उद्यानिकी	06	1–2 दिन	150
04	कृषि प्रसार	03	1–2 दिन	75
05	पशुपालन	03	1–2 दिन	70
06	गृह विज्ञान	03	1–2 दिन	75

द. विस्तार अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिन)	प्रशिक्षणार्थी
01	गेहूँ व चना फसल की उन्नत शस्य तकनीकें	01	01–02	30
02	गेहूँ व चना फसल में पोषक तत्व प्रबन्धन	01	01–02	25
03	पशुओं का आहार प्रबन्धन	01	01–02	25
04	उद्यानिकी फसलों की उच्च प्रौद्योगिकी	01	01–02	25
05	विकास की विभिन्न अवस्थाओं में आहार आयोजन एवं पोषण सुरक्षा	01	01–02	25

य. स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिन)	प्रशिक्षणार्थी
01	बीज उत्पादन एवं विपणन	01	05	10
02	जैविक खेती	01	05	10
03	खाद्य पदार्थों का संरक्षण, भण्डारण एवं मूल्य संवर्धन	01	05	15
04	कपडों की सिलाई एवं कढाई	01	05	15
05	बकरीपालन प्रबन्धन	01	05	10

र. अन्य विस्तार गतिविधियाँ

क्र.	गतिविधि	संख्या	प्रतिभागी
01	कृषक सेमिनार	01	60
02	कृषक संगोष्ठी	02	120
03	कार्यशाला	01	50
04	पूर्व प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन	02	60
05	समूह बैठक	10	160
06	किसान दिवस	01	50
07	किसान दिवस	01	50
08	विश्व खाद्य दिवस	01	50
09	विश्व मृदा दिवस	01	50
10	विधि प्रदर्शन	04	80
11	वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण	70	600
12	प्रक्षेत्र दिवस	05	160
13	किसान मोबाईल संदेश	12	34560
14	स्वच्छता गतिविधियाँ	15	300

गेहूँ फसल उत्पादन के मुख्य बिन्दु

खेत की तैयारी :– दो बार कल्टीवेटर द्वारा जुताई कर पाटा लगायें ताकि नमी का संरक्षण हो, साथ में उत्तम खेत तैयार हो जाये।

उर्वरक प्रबन्धन :– अनुसंशित पोषक तत्वों के लिए उर्वरक सिफारिश प्रति एकड –

सिंचित गेंहूँ :– एन. पी. के. और जिंक (48:24:16:2 किग्रा./एकड)

अर्ध सिंचित गेंहूँ :– एन. पी. के. और जिंक (32:24:12:2 किग्रा./एकड)

फसल	उपज (कुं./एकड)	उर्वरक संयोजन –I (किग्रा./एकड)	उर्वरक संयोजन –II (किग्रा./एकड)
सिंचित गेंहूँ	22 से 25	डी.ए. पी. – 52 एम. ओ. पी. – 25 यूरिया – 85 जिंक सल्फेट – 10	एन. पी. के. (12:32:16) – 75 यूरिया – 85 जिंक सल्फेट – 10
अर्ध सिंचित गेंहूँ	10 से 12	डी.ए. पी. – 50 एम. ओ. पी. – 20 यूरिया – 50 जिंक सल्फेट – 10	एन. पी. के. (12:32:16) – 75 यूरिया – 50 जिंक सल्फेट – 10

- उर्वरकों का उपयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें।
- गेंहूँ में नाईट्रोजन को एक चौथाई मात्रा व फास्फोरस, पोटाश व जिंक की पूरी मात्रा का उपयोग बुवाई के समय करें। नाईट्रोजन की शेष मात्रा को दो या तीन भागों में बाटकर प्रथम, द्वितीय व तृतीय सिंचाई के बाद उपयोग करें।
- फसल की बढवार प्रभावित होने पर या मौसम द्वारा फसल प्रभावित होने पर एन. पी. के. 18:18:18 का पर्णीय छिडकाव 01 किग्रा./एकड की दर से करें।

बीज दर :– समय से बुवाई हेतु – 40 किग्रा./एकड ,
असिंचित दशाओं में – 50 किग्रा./एकड
देर से बुवाई हेतु – 50 किग्रा./एकड

बीज उपचार :– फफूँदनाशक कार्बेन्डाजिम 25% + मैनकोजेब 50% की 03 ग्राम/किग्रा. बीज, कीटनाशक इमिडाक्लोरोप्रिड 48: एफ. एस., 1.2 मिली./किग्रा. बीज एवं तरल जैव उर्वरक एन. पी. के. कर्न्सोटिया 05 मिली./किग्रा. बीज को उपचारित करें।

फसल अन्तरण (कतार से कतार की दूरी) :– 22.5 सेमी.

प्रमुख किस्में :– भूमि व जल संसाधनों के आधार पर निम्न अनुसंशित किस्मों का चयन करें –

वर्षा आधारित किस्में	सीमित सिंचाई किस्में	पूर्णतः सिंचित किस्में
अमृता सी. – 306	एच. आई.1620 एच. आई. – 1605 (पूसा उजाला) डी. बी. डब्ल्यू. – 110 एच. आई. – 1531 (हर्षिता) जे. डब्ल्सू. – 3211 एच. आई. – 8777	एच. आई. – 8713 (पूसा मंगल) एच. आई. – 1544 (पूर्णा) एच. आई. – 8759 (पूसा तेजस) एच. आई. – 8663 (पोषण) एच. आई. – 8737 (पूसा अनमोल) जी. डब्ल्यू. – 451 एम. पी. – 3382 डी. डी. डब्ल्यू– 47

सिंचाई प्रबन्धन :– निम्न क्रान्तिक अवस्थाओं पर सिंचाई अवश्य करें –

- शीर्ष जड़ अवसथा – 17 से 21 दिन
- कंसे निकलना – 40 से 45 दिन
- गभोट – 60 से 65 दिन
- पुष्पन – 80 से 85 दिन
- दूधिया/परिपक्वता – 110 से 115 दिन

- मात्र एक सिंचाई की उपलब्धता होने पर शीर्ष जड़ फसल अवस्था होने पर सिंचाई करें।
- दो सिंचाई की उपलब्धता होने पर शीर्ष जड़ अवस्था व गभोट फसल अवस्था होने पर सिंचाई करें।
- तीन सिंचाई की उपलब्धता होने पर शीर्ष जड़, कंसे निकलने के समय एवं पुष्पन अवस्था पर सिंचाई दें।

खरपतवार प्रबन्धन :– गेंहूँ फसल में शाकनाशी रसायनों का उपयोग विवरण निम्नानुसार हैं –

खरपतवार का प्रकार	खरपतवारनाशी	मात्रा	उपयोग का समय
चौड़ी पत्ती वाले	मेट्सलफ्यूरॉन मिथाईल 20% WDG	08 ग्राम./एकड	25 से 30 दिन
	2,4– D, 58%	400 मिली./एकड	25 से 30 दिन
संकरी पत्ती वाले	फिनॉक्साप्रॉप पी ईथाइल 10%WG	350 मिली. /एकड	20 से 25 दिन
संकरी व चौड़ी पत्ती वाले	पेण्डीमेथलीन 30% EC	1000 मिली./एकड	बुवाई से 03 दिन के भीतर
	क्लोडीनोफॉप + मेटसल्फ्यूरॉन की 160 ग्राम मात्रा/एकड	160 ग्राम/एकड	25 से 30 दिन

उपरोक्त शाकनाशी रसायनों का उपयोग सावधानीपूर्वक करें। प्रति एकड की मात्रा 150 से 200 लीटर व फ्लैट फेन नोजेल का उपयोग करें।

प्रमुख कीट एवं प्रबन्धनः–

कीट	लक्षण एवं प्रबन्धन
दीमक	यह कीट पौधों को जमीन के नीचे से काट कर सुखा देता है। रात्रि के समय अधिक सक्रिय होता है। इसके नियन्त्रण हेतु बुवाई पूर्व बीजों को इमिडाक्लोप्रिड 48% एफ. एस. 1.2 मिली/किग्रा. बीज से उपचारित करें। खड़ी फसल में प्रकोप होने पर क्लोरोपाईरीफॉस 20% ई. सी. दवा की 1500 मिली/एकड़ मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
जड़ माहू	पौधों को उखाड़कर ध्यान से देखने पर यह कीट जड़ भाग से चिपके हुयें काले व भूरे रंग के स्पष्ट दिखाई देते है। इस कीट के प्रकोप के कारण पौधे पीले पड़कर सूखने लगते है। इसके नियन्त्रण हेतु बुवाई पूर्व बीजों को इमिडाक्लोप्रिड़ 48% एफ. एस. 1.2 मिली/किग्रा. बीज या थायोमिथाक्सॉम 30% एफ. एस. 1.5 मिली/किग्रा. बीज से उपचारित करें। खड़ी फसल में प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड़ 17.8 एस. एल. की 80 मिली/ एकड़ या थायोंमिथाक्सॉम 25 डब्ल्यू. जी. 80 ग्राम/एकड़ मात्रा को 150–200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

रोग प्रबन्धनः–

कीट	लक्षण एवं प्रबन्धन
करनाल बन्ट	दानों का रंग काला पड़ना/ प्रकोप अधिक होने पर गुणवत्ता में कमी/ अनुशंसित फफूँदनाशक दवा कार्बोक्सिन 37.5% + थायरम 37.5% ड़ी. एस. 2 ग्राम/ किग्रा. बीज
कण्ड़वा	पौधों के बाल कालेरंग के पाउडर में बदल जाते है। इसके नियन्त्रण हेतु बुवाई पूर्व बीजों को फफूँदनाशक दवा कार्बोक्सिन 37.5% + थायरम 37.5% ड़ी. एस 2 ग्राम/किग्रा. बीज से उपचारित करें।

चना फसल उत्पादन के महत्वपूर्ण बिन्दु

अनुशंसित किस्में–

प्रकार	किस्म	विशेषता	अवधि (दिन)	उत्पादन (कुं./एकड़)
देशी चना	आर. वी. जी. 202	उकठा रोग प्रतिरोधी, देर से बुवाई हेतु उपयुक्त,	110–115	10–12
	आर. वी. जी. 203	सूखा जड गलन रोग हेतु प्रतिरोधी	100	8–10
	आर. वी. जी. 204	उकठा रोग प्रतिरोधी, मशीन से बुवाई हेतु उपयुक्त,	110–115	10–12
	जाकी–9218	जड सडन तथा तना विगलन प्रतिरोधी	105–112	8–10
	जे. जी. –14	देर से बुवाई हेतु उपयुक्त	100–105	9–10
काबुली	शुभ्रा	सूखा जड गलन रोग हेतु प्रतिरोधी	115–120	10–12
	पी. के. वी.–4	बडा दाना, अधिक उत्पादन क्षमता	100–105	8–10

बीज दर– देशी चना – 30 किग्रा/ एकड़
काबुली चना – 40 से 45 किग्रा/एकड़

बीज उपचार– फफूँदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम 25% + मेन्कोजेब 50% की 03 ग्राम/किग्रा. बीज व तरल जैव उर्वरक एन. पी. के. कन्सोटिया 05 मिली/ किग्रा. बीज को उपचारित करें।

पोषक तत्व प्रबन्धन– अनुशंसित पोषक तत्वों के लियें उर्वरके सिफारशें प्रति एकड़ एन. पी. के. (08: 24: 08 किग्रा/एकड़)

संदर्भ उपज (कुं./एकड़)	उर्वरक संयोजन–1 (किग्रा/एकड़)	उर्वरक संयोजन–2 (किग्रा/एकड़)
08	डी. ए. पी. – 50 एम. ओ. पी.– 14	एन. पी. के. (12 :32 :16) – 75

नोट–

* उर्वरको का उपयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें।
* फसल में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय या बुवाई के पूर्व उपयोग करें।
* फसल की बढ़वार प्रभावित होने पर या मौसम द्वारा फसल प्रभावित होने पर एन. पी. के. 18 :18 :18 का पर्णीय छिड़काव 01 किग्रा/एकड़ की दर से करें।

सिंचाई–सिंचाई जल की उपलब्धता होने पर पुष्पन पूर्व व फली निर्माण के समय सिंचाई देना लाभदायक है।

खरपतवार प्रबन्धन– सिंचित क्षेत्रों में अधिक खरपतवार होने पर ड़ोरे या बुल्पे द्वारा सिंचित कार्य किया जा सकता है अथवा बुवाई से तीन दिनों के भीतर शाकनाशी दवा पेण्डीमेथीलिन 30% ई. सी. 1 ली./एकड़ की 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

कीट प्रबन्धन–

कीट	लक्षण एवं प्रबन्धन
फली भेदक कीट	वयस्क कीट मटमैला, पीला, भूसर या हल्के कथैई रंग का होता है। यह इल्लियां भूरी, कथैई, गुलाबी, पीली या हरी हो सकती है। इसके शरीर पर विभिन्न रंगो की लम्बवत धारियां होती है। इमामेक्टिन बेन्जोएट 5% एस. जी. 80 ग्राम/एकड़ ***या*** इन्डाक्साकार्ब 150 मिली/एकड़ का उपयोग करें।
कटुआ इल्ली	इसकी इल्ली रात्रि के समय चने की टहनियों को काटकर गिराती है। इसके नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेन्जोएट 5% एस. जी. 80 ग्राम/ एकड की दर से 150–200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।
दीमक	यह कीट पौधों को जमीन के नीचे से काट कर सुखा देता है। रात्रि के समय अधिक सक्रिय होती है। इसके नियन्त्रण हेतु क्लोरोपाईरीफॉस की 5 मिली मात्रा से प्रति किग्रा. बीज का उपचार करें। खडी फसल में प्रकोप दिखने पर क्लोरोपाईरीफॉस 20 ई. सी. की 1500 मिली. मात्रा को 500– 600 लीटर पानी घोलकर में छिड़काव करें।

रोग प्रबन्धन–

उकठा रोगः–

- भूमि सतह के पास से तना सिकुड़ा हुआ दिखाई देता है जिस कारण पौधे सूखने लगते हैं।
- थायोफिनेट मिथाईल 45% + पायरोक्लोस्ट्रोबीन 5% की 1 मिली मात्रा/ किग्रा. बीज या कार्बन्डाजिम 25% + मेन्कोजेब 50% की 03 ग्राम मात्रा/किग्रा बीज या कार्बन्डाजिम 12% + मेन्कोजेब 63% की 03 ग्राम मात्रा/किग्रा बीज व तरल जैव उर्वरक एन. पी. के. कन्सोटिया की 5 मिली मात्रा/ किग्रा. बीज से उपचारित करें।
- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- रोग रोधी किस्में जैसे– आर. वी. जी.– 202, आर. वी. जी. – 203, आर. वी. जी. – 204, जाकी– 9218, जे. जी. 11 की बुवाई करें।
- फसल चक्र को अपनायें।

सरसों फसल उत्पादन के मुख्य बिन्दु

भूमि का चयन– बलुई दोमट से दोमट मिट्टी वाली भूमि उपयुक्त होती है।
बुवाई का समय – सितम्बर मध्य से अक्टूबर अंत तक उपयुक्त रहता है।
बीज दर– 1– 1.5 किग्रा. प्रति एकड
बुवाई दर – सिंचित दशा में– पौध से पौध 15– 20 सेमी
कतार से कतार– 45 सेमी
असिंचित दशा में–पौध से पौध –15 सेमी
कतार से कतार– 45 सेमी

उन्नत किस्में–

क्र.	किस्म	विशेषतायें
01	एन. आर. सी. एच. बी. 101	उत्पादन क्षमता– 8–10 कु/एकड, अवधि– 125–135 दिन, सिंचित व देरी से बुवाई हेतु उपयुक्त
02	राज विजय मस्टर्ड–1	उत्पादन क्षमता– 7–8 कं/एकड., अवधि– 100–125 दिन, वर्षा आधारित क्षेत्र हेतु उपयुक्त
03	राज विजय तोरिया– 1	उत्पादन क्षमता– 5.8–7 कुं/एकड, अवधि– 100–105 दिन, वर्षा आधारित क्षेत्र हेतु उपयुक्त
04	एन. आर. सी. एच. बी. 501 (संकर)	उत्पादन क्षमता– 8–10 कुं/एकड़, अवधि– 125–140 दिन, सिंचित व समय से बुवाई हेतु उपयुक्त

खरपतवार प्रबन्धन– पेन्डीमेथलीन 30 EC की 1 लीटर मात्रा प्रति एकड़ बुवाई के 48 घण्टे के अंदर 150 लीटर पानी के उपयोग के साथ छिडकाव करे।

पोषक तत्व प्रबन्धन– **सिंचित क्षेत्र** – 25–35 दिन पर (फली निकलते समय)
दूसरी सिंचाई – फली बनते समय

कीट व रोग प्रबन्धन– अनुशंसित कीटनाशी व फफूँदनाशी दवाई का उपयोग कृषि वैज्ञानिक / अधिकारी के परामर्श अनुसार।

लहसुन व प्याज फसल उत्पादन के मुख्य बिन्दु

भूमि की तैयारी–

- खेत की 25–30 सेमी. गहरी जुताई कर अच्छा भुरभुरा बना लें।
- फसल में हल्की सिंचाई देने हेतु क्यारी बना लें। ये क्यारिया मजदूरों अथवा ट्रैक्टर चलित यंत्र से बनायें।

प्रजातियॉ–

लहसुन–

प्रजाति	अवधि	उत्पादन क्षमता/ एकड़
जी– 282	120–140 दिन	50–60 कुं.
जी– 384	150–160 दिन	60– 70 कुं.
जी– 50	140–160 दिन	50–60 कुं.

नोटः– बुवाई हेतु स्वस्थ्य बड़े आकार की एवं एक समान आकार की कलियों का चुनाव करे।

प्याज–

प्रजाति	अवधि	उत्पादन क्षमता/एकड़
एन. एच. आर. डी. एफ. रेड – 3	110– 120 दिन	150 – 160 कुन्तल
एग्री फाउण्ड लाईट रेड	110 – 115 दिन	120 – 130 कुन्तल
भीमा शक्ति	125–135 दिन	140– 160 कुन्तल

बीज उपचार –
बुवाई पूर्व बीज एवं रोप को फफूँदनाशक दवा कार्बन्डाजिम + मेन्कोजेब के घोल में (20 लीटर पानी में 40 ग्राम दवा) एक घण्टे तक उपचारित करें।

बीज दर व बुवाई विधि –

- 2– 2.5 क्विं/ एकड़ कलिया।
- एक एकड खेत की रोपाई हेतु 03 किग्रा. बीज पर्याप्त है। 8– 9 सप्ताह में बीज रोपाई हेतु तैयार हो जाता है।
- कतार से कतार की दूरी – 15 सेमी. ।
- पौध से पौध की दूरी – 10 सेमी.।

ाद एवं उर्वरक–

1. गोबर की खाद – 5 टन
2. सिंगल सुपर फास्फेट – 3 बैग
3. पोटाश – 20 किग्रा.
4. जिंक सल्फेट – 10 किग्रा.
5. सल्फर (80:) – 5 किग्रा.
6. यूरिया – 2 बोरी (1 बोरी यूरिया 20–25 दिनों की अवस्था पर तथा शेष 1 बोरी 50–60 दिनों की अवस्था पर दें)

खरपतवार प्रबन्धन–

लहसुन फसल में बुवाई उपरान्त एवं अंकुरण पूर्व व प्याज फसल में रोपाई के पूर्व पेण्डीमेथलीन 30 % EC की 1 लीटर/ एकड़ मात्रा या बुवाई के 15 दिन की अवस्था तक ऑक्सीफ्लोरफेन 23 % EC की 225 मिली/एकड़ मात्रा का 150 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सिंचाई –

बुवाई/ रोपाई के तुरन्त बाद पहली सिंचाई करें। दूसरी सिंचाई 4–5 दिनों उपरान्त तथा शेष सिंचाई 10–12 दिनों के अन्तराल से भूमि अनुसार करें।

रोग व कीट प्रबन्धन–

रसचूसक कीटों के प्रबन्धन हेतु स्ट्रिकी ट्रैप नग/एकड़ से लगायें तथा अधिक प्रकोप होने पर इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8: की 50–60 मिली दवा प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

नोट–रोग व कीट प्रकोप होने पर वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार उपचार करें।

सूक्ष्म सिंचाई पद्धति

सूक्ष्म सिंचाई पद्धति में मुख्य रूप से ड्रिप व स्प्रिंकलर विधियॉ है जिसमें अन्य सिंचाई विधियों की तुलना में कम पानी खर्च होता है। ड्रिप पद्धति से फल, सब्जियॉ, गन्ना, कपास, प्याज, लहसुन, अरहर, चना, आदि फसलों की सिंचाई की जा सकती है वही स्प्रिंकलर पद्धति में गेहूँ, चना, उडद, मूँग, धान आदि की सिंचाई की जाती है।

लाभ–

- फसल उत्पाद की गुणवत्ता व उत्पादकता में वृद्धि।
- सिंचाई जल की 50–70 प्रतिशत बचत।
- किसी भी प्रकार की भूमि में सिंचाई कार्य सम्भव।
- सिंचाई व उर्वरक उपयोग एक साथ सम्भव।
- श्रम एवं उर्वरक की बचत।
- खरपतवारों का कम प्रकोप।
- कम लागत में अधिक उत्पादन।

सावधानियॉ–

- पाइपलाईन, लेट्रल्स, फिल्टर आदि की नियमित सफाई करें।
- उचित दाब हेतु आवश्यक क्षमता के पम्प का उपयोग करें।
- स्क्रीन फिल्टर की सफाई नियमित करें।
- सिंचाई जल के साथ 100 प्रतिशत घुलनशील उर्वरक का ही उपयोग करें।

रबी फसलों के प्रमुख रोग तथा कीटों की पहचान एवं उनका नियंत्रण

फसल	कीट/ रोग	पहचान	प्रबन्धन
गेहूँ	जड माहू/दीमक	पौधों को उखाड़कर ध्यान से देखने पर यह कीट जड़ भाग में चिपके हुए काले व भूरे रंग के स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस कीट के प्रकोप के कारण पौधे पीले पड़कर सूखने लगते है।	बुवाई पूर्व अनुशंसित कीटनाशकों से उपचार, खडी फसल में लक्षण दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. 80 मिली/एकड़ ***अथवा*** थायोमिथॉक्साम 25 डब्ल्यू. जी. 80 ग्राम/ एकड़ की दर से छिडकाव करे।
चना	उकठा रोग	इस रोग के कारण पौधे पीले रंग के हो जाते है तथा जड़ वाले भाग को उंगलियों से पकड़कर खींचने पर स्लिप होता है जो कि फ्यूजेरियम रोग की मुख्य पहचान है। जड़ को चीर कर देखने पर आंतरिक भाग भूरे रंग का दिखाई देता है। पौधे उखाडनें पर आसानी से उखड़ जाता है।	बुवाई पूर्व अनुशंसित फफूँदनाशक से उपचार, खडी फसल में लक्षण दिखाई देने पर थायोफिनेट मिथाईल 45% + पायरोक्लोस्ट्रोबीन 5% 100 ग्राम/एकड या थायोफिनेट मिथाईल 70 डब्ल्यू. पी. 400 ग्राम/ एकड की दर से छिडकाव करें।
मसूर	माहू कीट	यह कीट बारीक, काले भूरे रंग के होते है। पौधे की शाखाओं पर चिपककर रस चूसते है	बुवाई पूर्व अनुशंसित कीटनाशकों से उपचार, खडी फसल में लक्षण दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. 80 मिली/एकड़ ***अथवा*** थायोमिथॉक्साम 25 डब्ल्यू. जी. 80 ग्राम/ एकड़
लहसुन एवं प्याज	रसचूसक कीट (थ्रिप्स)	वयस्क कीट 1 – 2 मि. मी. आकार के हल्के पीले रंग के होते हैं। शिशु गोल या अंडाकार एवं हरे – सफेद होते हैं।	बुवाई पूर्व अनुशंसित कीटनाशकों से उपचार व पीले चिपचिपे ट्रेप 20न. /एकड, खडी फसल में लक्षण दिखाई देने प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17. 8 एस. एल. 80 मिली/एकड़ ***अथवा*** थायोमिथॉक्साम 25 डब्ल्यू. जी. 80 ग्राम/ एकड़
	परपल ब्लाच बीमारी	ग्रस्त भाग पर सफेद भूरे रंग के आँख के आकार के धब्बे बनते हैं, जिनका मध्य भाग बाद में बैंगनी रंग का हो जाता है।	बुवाई पूर्व अनुशंसित फफूँदनाशक से उपचार, खडी फसल में लक्षण दिखाई देने पर थायोफिनेट मिथाईल दवा की 400 ग्राम/एकड

बरसीम – हरे चारे का उत्तम स्रोत

बरसीम रबी के मौसम में उगाई जाने वानी महत्वपूर्ण चारे की फसल है। यह बहु कटाई (4 से 8) चारा फसल है, जिससे लम्बे समय (नवम्बर – मई) तक पौष्टिक हरा चारा प्राप्त होता है।

जलवायु :– बरसीम की उचित वृद्धि एवं विकास के लिए सूखी एवं ठण्डी जलवायु सर्वोत्तम मानी जाती है। बेहतर बढ़वार एवं उपज के लिए 20 – 25 सेंटीग्रेट तापमान उपयुक्त होता है।

मृदा :– बरसीम की खेती के लिए जल निकास युक्त बलुई, दोमट मिट्टी जिसमें कैल्शियम, फास्फोरस व कार्बनिक पदार्थ प्रचुर मात्रा में हों, सर्वोत्तम मानी जाती है। अच्छे अंकुरण के लिए खेत की मिट्टी को बहुत अच्छी तरह जुताई करके बारीक कर लेना चाहिए।

❖ **उन्नतशील प्रजातियॉ :–**

– वरदान
– मेसकावी
– जे. बी. – 1, जे. बी. – 2, जे. बी. – 3

❖ **बुवाई का समय :–** अच्छे उत्पादन के लिए उचित समय पर बुवाई करना अत्यंत आवश्यक है। इसकी बुवाई अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक अवश्य कर देनी चाहिए। समय से बुवाई के लिए 25 किग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है। जल्दी अथवा देरी से बुवाई हेतु 35 किग्रा./है. बीज दर का उपयोग करना चाहिए।

यदि खेत में पहली बार बरसीम की बुवाई की जा रही है तो राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना अत्यंत आवश्यक है। बीज के उपचार के लिए 50 ग्राम गुड़ को 01 लीटर पानी मेंघोलकर उसमें एक पैकेट राईजोबियम कल्चर (250 ग्राम) को अच्छी प्रकार से मिला लें। इस प्रकार तैयार मिश्रण कों 10 किग्रा. बीज के ऊपर छिडक कर हल्के हाथों से मिलायें ताकि बीज के ऊपर एक हल्की परत चढ़ जायें। इसके बाद में बीज को 3 – 4 घण्टे तक छाया में सूखने के लिए छोड़ दें और फिर बीज को बुवाई के लिए उपयोग करें।

❖ **बुवाई विधि :–** बरसीम की बुवाई दो विधि द्वारा की जाती है।

– शुष्क विधि
– भीगी विधि

❖ **शुष्क बुवाई विधि :–** सूखे खेत में इस विधि से बुवाई की जाती है। इस विधि से बुवाई करने से अंकुरण प्रतिशत कम हो जाता है।

❖ **भीगी बुवाई विधि :–** खेत में क्यारियॉ बनाकर उसमें 5–6 सेमी. ऊँचाई तक पानी भर दिया जाता है फिर बीज को छिटकवॉ विधि से बो दिया जाता है। 5 –6 दिनों के बाद अंकुरण अच्छी तरह हो जाने के पर सिंचाई करनी चाहिए।

❖ **खाद एवं उर्वरक प्रबन्धन :–** बुवाई के 25 से 30 दिन पहले प्रति हैक्टर 10–15 टन अच्छी तरह सड़ी/पकी गोबर की खाद खेत में डालकर अच्छी तरह मिला देना चाहिए। इसके अतिरिक्ति 20 किग्रा. नाईट्रोजन व 60 किग्रा. फास्फोरस प्रति हैक्टर की दर स देना चाहिए। नाईट्रोजन व फास्फोरस की मात्रा बुवाई के समय की देनी चाहिए।

❖ **सिंचाई :–** अधिक चारा उत्पादन के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है। पहली, दूसरी सिंचाई 5–6 सेमी. गहरी व 5–6 दिनों के अन्तराल पर करनी चाहिए। इसके बाद फरवरी के आखिरी तक 20–20 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए। मार्च से मई तक 8–10 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

❖ **कटाई :–** बरसीम की प्रथम कटाई से 40–45 दिन बाद करनी चाहिए। प्रथम कटाई के बाद प्रत्येक कटाई 25–30 दिनों के अन्तराल पर करनी चाहिए। कटाई भूमि की सतह से लगभग 5–7 सेमी. ऊँचाई से करना उपयुक्त रहता है। यदि बरसीम से बीज उत्पादन नही लिया जाता है तो प्रति हैक्टर 80–100 टन हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।

खुरपका– मुँहपका

खुरपका – मुँहपका रोग विषाणुजनित अत्यंक संक्रामक रोग है जो कि फटे खुर वाले पशुओं– गाय, भैंस, भेड, बकरी, सुअर आदि में होता है। यह रोग एक पशु से दूसरे पशु में बहुत तेजी से फैलता है।

❖ **रोग विस्तार के माध्यम :–**

- संक्रमित पशुओं के साथ निकट संपर्क
- संक्रमित आहार एवं पानी के द्वारा
- दूषित हवा एवं अन्य वस्तुओं द्वारा

❖ **रोग के लक्षणः–**

- तेज बुखार
- मुँह, मसूडे, जीभ के ऊपर, होठो पर एवं खुरों के बीच छाले पडना।
- मुँह से लार टपकना एवं चप– चप की आवाज आना।
- पशु का लंगडाकर चलना।
- दुधारू पशु के उत्पादन में कमी।

❖ **रोग के लक्षण दिखने पर क्या कदम उठायेंः–**

- बीमार पशु को तत्काल स्वस्थ पशुओं से अलग कर दें एवं उसको चारा– पानी भी अलग दें।
- संक्रमित पशु का दूध उसके बछडा/ बछडी को ना पिलायें।
- पशु को बांधकर रखे, उसे घूमने फिरने ना दे।
- पशु को सूखे स्थान पर बांधे, उसे कीचड, गीली मिट्टी व गन्दगी से दूर रखें।
- बीमार पशु को ना बेचे।
- जहॉ पर पशु की लार गिरे वहॉ कपडे धोने का सोडा (1–2%) व चूने का छिडकाव करें।
- मृत पशु को गड्ढें में गाड़ दें एवं उस पर चूने का छिडकाव कर दें।
- रोग के लक्षण दिखने पर तुरंग नजदीकी पशु स्वास्थ्य केन्द्र पर संपर्क करें।

❖ **रोग से बचावः–**

रोग से बचाव हेतु टीकाकरण ही अंतिम उपाय है।

- टीकाकरण वर्ष में 02 बार (अक्टूबर– नवंबर एवं फरवरी– मार्च) किया जाता है।
- गाय/ भैंस में 04 माह एवं भेड़/ बकरी में 03 माह या अधिक उम्र के सभी पशुओं का टीकाकरण अवश्य करायें।
- टीकाकरण हेतु नजदीकी पशु स्वास्थ्य केन्द्र पर संपर्क करें।

सामायिक सलाह

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

धान :–

- धान फसल में दाना बनते समय खेत में नमी अवश्य बनाये रखें।
- फसल में गंधी बग, तना भेदक, भूरा फुदका कीटों का प्रकोप दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड 19.81% + बीटासायफ्लूथ्रिन 9.89% की 140 मिली/ एकड़ की दर से छिड़काव करें।

सोयाबीन :–

- फसल की कटाई खुले मौसम में करें तथा काट कर सूखें स्थान पर सुरक्षित रखें।
- आगामी फसल हेतु खेत की बखरनी करें, जिससे खेत की नमी संरक्षित रहे।
- बीज उत्पादन हेतु लगायी गयी फसल की कटाई मानव श्रम द्वारा व गहाई थ्रेसर के द्वारा करें।

चना, मटर व मसूर :–

- भूमि में संरक्षित नमी का उपयोग करते हुए अक्टूबर माह के द्वितीय पखवाडे में फसल की बोनी कर लें तथा अतिवृष्टि की दशा में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।
- सरसों को अन्तरवर्ती फसल के रूप में लगायें जिससे अतिरिक्त आय प्राप्त हो सके।

गेंहूँ व चना:–

- बुवाई से पूर्व बीजों को अनुशंसित दवाओं से उपचारित करें। गेहूँ फसल में फफूँदनाशक कार्बेन्डाजिम 25% + मैनकोजेब 50% की 03 ग्राम/किग्रा. बीज, कीटनाशक इमिडाक्लोरोप्रिड 48: एफ. एस., 1.2 मिली./किग्रा. बीज एवं तरल जैव उर्वरक एन. पी. के. कर्न्सोटिया 05 मिली./किग्रा. बीज को उपचारित करें।
- चना फसल के बीजो को फफूँदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम 25% + मेन्कोजेब 50% की 03 ग्राम/किग्रा. बीज व तरल जैव उर्वरक एन. पी. के. कन्सोटिया 05 मिली/ किग्रा. बीज को उपचारित करें।

सब्जियों में

टमाटर :–

- झुलसा नामक बीमारी से बचाव हेतु 1.0 किग्रा. डाईथेन एम. –45 दवा 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिडकाव करें।
- लीफकर्ल वायरस के निवारण हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस. एल. दवा 100–125 मिली./हैं. की दर से छिडकाव करें।
- नयी फसल की रोपाई का उचित समय है, रोपाई 60X45 सेमी. की दूरी पर करें।

आलू :–

- आलू की बुवाई हेतु खेत की आखिरी जुताई पर (एन. पी. के. 75:100:100 किग्रा./है.नाईट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की दर से उपयोग करें।
- कंद उपचार थायोफिनेट मिथाईल 45% + पायरोक्लोरोस्ट्राबीन 5% एफ. एस. 1 मिली/किग्रा. का उपयोग करें।
- बुवाई 60X15 सेमी. की दूरी से करें।

लहसुन :–

- खेत की आखिरी जुताई पर 80:60:40 किग्रा./हैक्टर की दर से नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश का उपयोग करें।
- बीजों को बुवाई पूर्व कार्बन्डाजिम 25% + मेन्कोजेब 50% 3 ग्राम/किग्रा. की दर से उपचारित करें।
- बुवाई 20 X 10 सेमी. की दूरी से करें।

फलों में

- पुराने बगीचों में निंदाई – गुडाई व थाला बनाने का कार्य सम्पन्न करें एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें।
- पुराने बगीचों में रस्ट रोग की रोकथाम हेतु ब्लाईटॉक्स 50 (0.25 प्रतिशत) दवा का छिडकाव करे।

पशुओं में :–

- नवजात शिशुओं को खीस तथा कृमिनाशक दवा अवश्य पिलायें।
- बरसीम एवं लूसर्न के खेत की तैयारी व बुवाई करें।
- दोहन से पहले थनों को भली प्रकार से धोयें तथा साफ कपडें से पोछें।
- खुरपका मुहपका रोग का टीका लगवायें।
- पशुओं को खनिज मिश्रण चटायें ।
- पशुओं को हरे चारे की कुट्टी बनाकर खिलायें।

नवम्बर माह के कृषि कार्य

अरहर :–

- शीघ्र आने वाली किस्मों की 75 से 80 प्रतिशत फलियॉ पकने पर कटाई करें
- लम्बी अवधि की किस्मों में फली भेदक कीट की रोकथाम हेतु प्रोपेनोफॉस 40 ई.सी. की 01 लीटर/हैक्टर दवा का छिडकाव करें।

मटर व मसूर :–

- अक्टूबर माह में बोई गयी फसल में सिंचाई, निंदाई – गुडाई करें।
- इन फसलों की बुवाई नवम्बर के प्रथम पखवाडे तक कर दें।
- बीजोपचार हेतु कार्बेन्डाजिम + मेन्कोजेब 2.5 ग्राम/किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।

गेंहूँ :–

- बुवाई 18–22 सेमी., पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर करें तथा उचित नमी बनाये रखें।
- देर से बोनी पर 25 प्रतिशत ज्यादा बीज (125 किग्रा/हैक्टर) का उपयोग करें व अनुशंसित किस्में लोकवन, जी. डब्ल्यू. 499, जे. डब्ल्यू. 3010 का चयन करे एवं अनुशंसित दवाओं से बीजोपचार करे।

सब्जियों में

आलू :–

- बुवाई के 35–40 दिन बाद झुलसा रोग की रोकथाम हेतु डाईथेन एम –45 की 02 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

बैंगन :–

- तना व फल छेदक कीट के प्रकोप की दशा में प्रोपेनोफॉस 40 ई.सी. दवा 02 मिली./लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।

मिर्च :–

- सफेद मक्खी के प्रकोप की अवस्था में डाईमेथोएट 30 ई. सी. मिली. मात्रा को प्रति लीटर में घोलकर छिडकाव करें।

गोभी :–

- गोभी वर्गीय सब्जियों की रोपाई का उपयुक्त समय है।
- फसल में आवश्यकतानुसार निंदाई – गुडाई व सिंचाई करें।
- खड़ी फसल में 50 किग्रा. यूरिया का प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करें।

फलों में

- डाईबेक रोग के उपचार हेतु रोग ग्रस्त भाग को 7.5 सेमी. नीचे से कटाई कर कॉपर ऑक्सीक्लोराईड की 03 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

अमरूद व पपीता :–

- आवश्यकतानुसार सिंचाई करें व फलों को चिड़ियों से बचायें।
- अमरूद में छाल खाने वाली इल्ली से बचाव हेतु डाईक्लोरोवॉस दवा 400 मिली./है. की दर से छिडकाव करें।

नींबू वर्गीय फल :–

- पके फलों को तोडकर बाजार भेंजें।
- फल गिर रहें हो तो नेपथेलीन एसिटिक एसिड 10 पी. पी. एम. का छिडकाव करें।

पशुओं में

- पशुओं को कृमिनाशक का सेवन अवश्य करें।
- खुरपका, मुहपका रोग का टीका अवश्य लगवायें
- पशुओं को संतुलित आहार दें तथा बांझपन का उपचार करायें।
- नवजात बछडों की अच्छी तरह से देखभाल करें।

दिसम्बर माह के कृषि कार्य

गेंहूँ :–

- किसी कारणवश गेंहूँ की बोनी न कर पाये हो तो इस माह के पहले पखवाडे तक अवश्य कर लें, इस हेतु पछेती किस्मों लोकवन, जी. डब्ल्यू. 499, जे. डब्ल्यू. 3010 का चयन करें तथा बीजदर 125 किग्रा./है. रखें एवं अनुशंसित दवाओं से बीजोपचार अवश्य करे।

मटर :–

- समय से बोई नयी फसल में फूल आने से पूर्व एक सिंचाई अवश्य कर दें।
- सैनिक कीटों की रोकथाम हेतु क्लोरोपाईरीफॉस 20 ई. सी. दवा की 1.25 लीटर मात्रा का प्रति हैक्टर की दर से छिडकाव करें।
- पछेती या अगेती झुलसन नामक रोग से बचाव हेतु थायोफिनेट मिथाईल 400 ग्राम/एकड़ दवा को 150–200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

चना :–समय से बोये गये चने में आवश्यकतानुसार पहली सिंचाई बोने से 40–45 दिनों के बाद करें।

बरसीम :–

- समय से बोई गयी बरसीम की फसल जब 50–60 दिन की हो जाये, तो प्रथम कटाई कर लेनी चाहिए।
- इसकी भूमि कटाई सती से 4–5 सेमी. ऊँचाई से करना चाहिए।
- कटाई के तुरन्त बाद सिंचाई करके यूरिया का उपयोग करें।

सब्जियों में

मटर :– सब्जी वाली मटर में हल्की सिंचाई व निंदाई –गुडाई का कार्य करें

प्याज :–रबी के लिए तैयार रोपा की रोपाई करें।

टमाटर :–

- आवश्यकतानुसार 10–15 दिनों के अन्तराल पर हल्की सिंचाई करें।
- पौधों को वायरस से बचाने के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस. एल. दवा की 50–60 मिली./एकड की दर से छिडकाव करें।

आलू :–

- कूंडों में हल्की सिंचाई करें तथा यह ध्यान रखें कि कूडों में मेंढों से ऊँचा पानी न भरें।
- बुवाई के 45–60 दिनों के भीतर मिटटी चढाने का काम अवश्य करे।

फलों में

ऑवला :–

- फल सड़न रोग की रोकथाम हेतु 01 किग्रा. हैक्साकोनॉजोल 4 प्रतिशत + जिनेब 68 प्रतिशत को 200 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

पपीता :–

- बाग में पर्याप्त नमी बनाये रखें।
- कच्चे फलों को टाट या बोरों से ढक कर रखें।

अमरूद :–

- फलों को चिड़ियों तथा अन्य पक्षियों से बचायें।
- पके फलों को तोड़कर बाजार भेजते रहें।

पशुओं में

- बरसीम को पाले से बचाने के लिये सिंचाई करते रहे।
- पशुओं तथा बछड़े बछियों को कृमिनाशक दवा पिलायें।
- पशुओं का बीमा अवश्य कराये।
- ठण्ड से बचाने के लिये पशुशाला में बिछावन की व्यवस्था करे।
- ब्रसीम चारे के साथ 02 किग्रा. सूखा चारा खिलाये।

केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियाँ

रबी इन्टरफेस

पूर्व प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन

किसानों हेतु खाद्य एवं पोषण

विधि प्रदर्शन

गाजरघास उन्मूलन सप्ताह

कृषि तकनीकी सप्ताह

प्रक्षेत्र दिवस

स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण

कृषक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रेषित किसान मोबाईल संदेश अवश्य पढ़ें।
पुनः जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र के दूरभाष क्रमांक +91 7489763338 एवं टोल फ्री नं. : 1800 180 1551 पर संपर्क करें।

बुक पोस्ट

प्रेषक -
प्रमुख,
सी. आर. डी. ई. कृषि विज्ञान केन्द्र
सेवनिया, तहसील- इछावर,
जिला- सीहोर (म.प्र.)

प्रति
.....
.....
.....